29/4/20
GE-Sem II

14

सम्पूर्ण क्रांति
(Total Revolution)

विश्व के प्रत्येक आन्दोलन अथवा क्रांति की पृष्ठभूमि में कोई न कोई नेतृत्व अवश्य होता है। इस नेतृत्व में वे सभी विशेषतायें समाहित होती हैं कि वह सम्पूर्ण देश को अपने विचारों से प्रभावित करता है। एक विशेष दिशा में परिवर्तन लाने के लिये प्रेरित करता है। उदाहरण के लिये महात्मा गांधी, जिन्होंने अपने नेतृत्व व विचारों से अंग्रेजों को झकझोर दिया और सम्पूर्ण भारत के निवासियों को एकजुट करके स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित किया। यह गांधी जी का ही व्यक्तित्व था जिससे सभी जाति, धर्म व सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। सत्य, प्रेम, अहिंसा और सत्याग्रह के मंत्र ने अन्ततः अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने के लिये बाध्य कर दिया।

महात्मा गांधी, विनोबा भावे और जय प्रकाश नारायण ये तीन व्यक्ति हैं जो सत्ता के भूखे नहीं थे। इन्होंने आन्दोलन इसलिये नहीं किया कि वे स्वतंत्र भारत में प्रधान मंत्री अथवा राष्ट्रपति बनेंगे बल्कि उन्होंने देश के कल्याण, उत्थान और पुनर्निमाण के लिये किया। जयप्रकाश नारायण ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश और जन की सेवा में लगाया। सम्पूर्ण-क्रांति की विवेचना करने से पूर्व हम बहुत संक्षेप में जे.पी. (जयप्रकाश नारायण) के व्यक्तित्व के बारे में कुछ बताना चाहेंगे क्योंकि जिन आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गलियारों से वे गुजरे थे उसने उन्हें अनुभव के भंडार दिये। समाज को बदलने का एक क्रांतिकारी फलसफा दिया।

आरम्भिक जीवन में यदि हम झांक कर देखें तो उन पर अनेक विचारकों और दर्शन का प्रभाव पड़ा था। 16 वर्ष की आयु में ही सामयिक राजनीतिक गतिविधियों से परिचित होने लगे थे। यह वह समय था जब एक तरफ उग्रवादी हिंसात्मक कार्यों से अंग्रेजों को थका रहे थे। दूसरी तरफ महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के द्वारा अंग्रेज़ी शासकों को झकझोर कर रख दिया था। जे.पी. पर गांधी जी का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उनके सम्पूर्ण जीवन को ही बदल दिया। सन् 1921 में वे गाँधी जी के सत्याग्रह में शामिल हुए।

उच्च शिक्षा के लिये जब वे अमेरिका गये, वहाँ समाज के विभिन्न स्वरूपों को देखने

Scanned with CamScanner

का उन्हें अवसर मिला। पूंजीवादी व्यवस्था के अमानवीय रूप को देखा। व्यक्ति-व्यक्ति का शोषण कर रहा था। व्यवस्था के नीचे नरक पल रहा था। इस अनुभव ने उन्हें पूँजीवाद के विरुद्ध खड़ा कर दिया। वे समाजवादी चिन्तक एम.एन.राय से भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। शिकागो और विस्कांसिन के मध्य की उनकी यात्रा समाजवाद से मार्क्सवाद की यात्रा थी। इस समय वे कट्टर मार्क्सवादी बन गये, लेकिन वे मार्क्सवाद के सिद्धान्तों के क्रियान्वयन से सहमत नहीं थे। इसीलिये भारत लौटने पर वे साम्यवादी खेमे में न जाकर गांधी जी के आन्दोलन में शामिल हुए। गाँधी जी के आन्दोलनों में भाग लेने से कुछ पृथक प्रकार के अनुभव उन्हें हुए। कालान्तर में गांधी जी की नीतियों और कार्यशैली से भी वे पूर्णत: सहमत नहीं हुए। इसीलिये 17 मई, 1934 को नासिक जेल से छूटने के पश्चात प्रथम अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी सम्मेलन किया गया। आचार्य नरेन्द्र देव अध्यक्ष और जय प्रकाश इसके मंत्री बने। इस खेमें के प्रसिद्ध जनप्रिय नेता अशोक मेहता, अच्युत पटवर्धन, राम मनोहर लोहिया, एम.आर. मसानी आदि थे।

समय के साथ जे.पी. में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। उनका मार्क्सवाद और मार्क्सवादी भौतिकवाद से लगाव और मोह समाप्त हो गया। गांधी से भी वे पूरी तरह सहमत नहीं दिखायी पड़े, पर उनके अनेक विचारों से बहुत प्रभावित थे। 1951 में भूदान आन्दोलन के आरम्भ होने के पश्चात वे विनोबा भावे के सम्पर्क में आये। विनोबा जी का प्रभाव उनके चिन्तन, सोच, और विचारों पर इतना गहरा पड़ा कि वे कह उठे कि सर्वोदय का एक सिद्धान्त है कि सत्ता के द्वारा सच्ची जन-क्रांति लाना सम्भव नहीं है। इसीलिये वे नेहरू के मंत्रि मंडल में मंत्री नहीं बने। इसके पश्चात उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सर्वोदय को समर्पित कर दिया।

जय प्रकाश नारायण के विचारों का यदि विश्लेषण किया जाय तो उनके चिन्तन में मार्क्स, गांधी और विनोबा भावे के विचार स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। इन तीन मनीषियों और समाज सेवकों के विचारों का समन्वयात्मक रूप हमें जे.पी. में दिखाई पड़ता है किन्तु उनका वैयक्तिक सोच और चिन्तन इतना विशाल था कि उन्होंने समग्र समाज के ढांचे को बदलने के लिये एक व्यावहारिक दर्शन की स्थापना की, जिसे हम सम्पूर्ण क्रांति अथवा आन्दोलन कहते हैं।

क्रांति का गहरा प्रभाव समाज पर पड़ता है लेकिन समाज के सभी सांस्कृतिक पक्षों पर इसका प्रभाव तत्काल नहीं पड़ता है। सामान्यतया क्रांति का अर्थ है कि सत्ता ढांचे में परिवर्तन लाना अथवा मौजूदा शक्ति सत्ता को बदलना। इसके साथ ही हित समूह समाज के अन्य ढांचे में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। वास्तव में, क्रांति समाज के बुनियादी ढांचे में ही आमूलचूल परिवर्तन करना चाहती है। इसी के लिये संघर्ष करती है।

जय प्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति में हिंसात्मक गतिविधियों का कोई स्थान नहीं है। जीवन के अन्तिम क्षणों में जे.पी. ने भारत के नव निर्माण के लिये एक व्यावहारिक कार्ययोजना का दर्शन प्रस्तुत किया। सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा की घोषणा उन्होंने 5 जून 1974 को पटना में की। उन्हीं के शब्दों में –

Scanned with CamScanner

"5 जून, 1974 को पटना के गांधी मैदान की विशाल सभा में बोलते हुए सहज ही मेरे मुँह से पहली बार सम्पूर्ण क्रांति शब्द निकल पड़े थे। उस दिन मैंने कहा था यह आन्दोलन छात्र संघर्ष समिति की मात्र 10-12 मांगों की पूर्ति के लिये ही नहीं, यह सम्पूर्ण क्रांति की शुरुआत है। इसके उद्देश्य बहुत दूरगामी है। भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाने, जनता का सच्चा राज कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अन्त करना, एक नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना, नया बिहार बनाना और अन्ततोगत्वा नया भारत बनाना है। ऐसा एक सम्पूर्ण क्रांति का आन्दोलन है यह।" आगे उन्होंने कहा 'समाज और व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में क्रांतिकारी परिवर्तन हो और व्यक्ति का और समाज का विकास हो, दोनों ऊंचे उठें, केवल शासन बदले इतना ही नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज भी बदले। इसलिए मैंने सम्पूर्ण क्रांति कहा है। आप इसे समग्र क्रांति भी कह सकते हैं।[1]"

सम्पूर्ण क्रांति की तलाश उनके मन में अन्दर ही अन्दर घर बना रही थी। वे देश की व्यवस्था से चिन्तित थे। निरन्तर सोचते रहते थे कि कैसे और किन साधनों से देश के आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक ढांचे में परिवर्तन लाया जाय। चण्डीगढ़ में कारावास के दौरान जे.पी. ने कारावास की जो कहानी लिखी जो (जेल डायरी के नाम से मशहूर है) उसमें उन्होंने क्रांति से अपने तीव्र लगाव की चर्चा की है। उन्होंने लिखा है-

"जब मैं उच्च विद्यालय में था, तब ही क्रांति का विचार मेरे मन में अंकुरित हो गया। उस समय वह राष्ट्रीय क्रांति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता का विचार था। ..... क्रांति करने की जो तीव्रता मेरे मन में थी, वह मुझे मार्क्सवाद की ओर तथा राष्ट्रीय आन्दोलन से गुजरते हुए लोकतांत्रिक समाजवाद की ओर और फिर विनोबा जी के प्रेम से क्रांति की ओर खींच ले गई। ..... क्रांति के साथ मेरा लगाव होने के कारण जब मुझे लगा कि ग्राम स्वराज्य से वह अंहिसक क्रान्ति होने वाली नहीं है, तो मैं दूसरे रास्तों की तलाश करने लगा।[2]" क्रांति की खोज उनके अन्तर्मन में युवावस्था से ही थी। वे विचारधाराओं के अनेक पड़ावों पर रुके पर सन्तोष नहीं हुआ तो समाजवाद, गाँधीवाद और सर्वोदय की ओर मुड़ गये और अन्त में अपने जीवन की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पड़ाव पर सम्पूर्ण क्रांति का व्यावहारिक दर्शन प्रस्तुत किया। **हरि विष्णु कामथ** सम्पूर्ण क्रांति के संबंध में लिखते हैं -

"यह सम्पूर्ण शब्द बड़ा ही अर्थपूर्ण है। इतिहास में क्रांतियाँ अनेक हुई। मानव समाज अपने विकास के क्रम में अपनी दिशा बदलता रहा। उसकी विकास यात्रा में अनेक मोड़ आते रहे हैं। ऐसे हर मोड़ को क्रांति की संज्ञा दी जा सकती है। परन्तु इतिहास साक्षी है कि समाज के जीवन में सर्वांगीण क्रांति जिसको जे.पी. ने 'सम्पूर्ण क्रांति' का नाम दिया

1. वी.एन. सिंह, भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ 316
2. जयप्रकाश नारायण, उधृत, जय प्रकाश, पृष्ठ 103.

Scanned with CamScanner

है, नहीं हुई। फ्रांस की क्रांति और रूस, चीन की क्रान्ति भी जे.पी. की नजर में अधूरी और अपूर्ण है। वह सर्वांगीण या सम्पूर्ण तो हरगिज नहीं है। जे.पी. अपने जीवन की आखिरी सांस तक ऐसी सर्वांगीण और सम्पूर्ण क्रांति की खोज करते रहे और उस मंजिल तक पहुँचने के लिये बार-बार अपना मार्ग बदलते रहे।[3]"

क्रांति की यात्रा के अनुभव ने क्रांति शब्द के अर्थ को कहीं अधिक व्यापक बना दिया। क्रांति बदलाव अथवा सत्ता परिवर्तन तक ही सीमित नहीं रहा। क्रांति का अर्थ मार-काट अथवा उथल-पुथल के घेरे तक ही सीमित होकर नहीं रह गया वरन् अब क्रांति में मूल्य, मनोवृत्ति, रचना, समाज के सभी क्षेत्रों में रचनात्मक और सृजनात्मक परिवर्तनों का समावेश हो गया था। क्रांति का कैनवास विशाल और व्यापक बन गया था। जे.पी. के सम्पूर्ण क्रांति का आन्दोलन कहीं अधिक गहरा और व्यापक है। वह फ्रांस, रूस की क्रांति की तरह नहीं है। जे.पी. ने सम्पूर्ण क्रांति को एक नया आयाम और अर्थ दिया जो समुद्र की तरह गहरा है और हिमालय की तरह ऊँचा और विशाल है। यह समाजवाद, गाँधीवाद और विनोबा भावे के विचारों के मन्थन के पश्चात एक नयी दृष्टि के साथ जन्मा है। जे.पी. के जीवन में स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, जो फ्रांस क्रांति के नारे थे वे उनके जीवन के साथ थे और साथ थे उनके मानवता के मूल्य व आदर्श। वे छोटे-से-छोटे व्यक्ति को भी आदमी के रूप में देखते थे और उसका सम्मान करते थे। जे.पी. की क्रांति की अवधारणा उनकी गतिशीलता का परिचायक रही है।

सम्पूर्ण क्रांति के संबंध में स्वयं जे.पी. लिखते हैं कि "'सम्पूर्ण क्रांति' समाज की नवरचना के लिये एक ऐसी क्रांति की आवश्यकता है, जो सम्पूर्ण भी हो और समग्र भी हो। वह समाज के एक-एक अंग को और एक-एक क्षेत्र को स्पर्श करने वाली हो। साथ ही, वह व्यक्ति के समग्र जीवन को भी आन्दोलित करे। व्यक्ति और समाज दोनों में सर्वांगीण परिवर्तन लाने की शक्ति इस सम्पूर्ण क्रांति में होनी चाहिए।.... मैं कहता हूँ कि सात प्रकार की क्रान्तियों के मिलने से एक सम्पूर्ण क्रांति बनती है। ये हैं, सामाजिक क्रांति, आर्थिक क्रांति, राजनीतिक क्रांति, सांस्कृतिक क्रांति और नैतिक अथवा आध्यात्मिक क्रान्ति।[4]"

जय प्रकाश नारायण का यह विचार था कि राजनैतिक सत्ता दिलाने वाली स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है। वे यह भी मानते थे कि जनता की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के लिये राज्य सत्ता पर निर्भर रहना काफी नहीं है। उनका लक्ष्य और प्रयास दोनों इस बात के लिये था कि जनता की अधिक से अधिक जन आन्दोलन में सहभागिता हो। जनता ही समाज में बदलाव ला सकती है। सत्ता नहीं। सम्पूर्ण क्रांति में जनता की आन भागीदारी हो। इसके माध्यम से ही समाज के आर्थिक सामाजिक ढांचे में वहाँ परिवर्तन घटित होंगे, वहीं आर्थिक सामाजिक न्याय सभी को समान रूप से प्राप्त हो सकेंगे। राजनैतिक बदलाव

---

3. जयप्रकाश नारायण, उद्धृत, जन प्रकाश, पृष्ठ 103.
4. जयप्रकाश नारायण, उद्धृत, जन प्रकाश, पृष्ठ 585.

के द्वारा एक अहिंसात्मक सामाजिक व्यवस्था की रचना हो सकेगी। सम्पूर्ण क्रांति कोई आदर्श कल्पना नहीं है, वरन् यह यथार्थ पर आधारित एक व्यावहारिक दर्शन है जो आम, निर्धन और धनाढ्य वर्ग के व्यक्तियों से समानता और सामाजिक न्याय से सीधा जुड़ा है। इसके दर्शन में न कोई छोटा है और न कोई बड़ा। सभी व्यक्ति समान हैं। जे.पी. का सकारात्मक और रचनात्मक सोच, समाज की पुनर्रचना, मानवतावादी मूल्य उनके सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा की पृष्ठभूमि में थी। यह सामाजिक अन्याय और शोषण के विरुद्ध है। जे.पी. ने स्वयं लिखा है कि "कमजोर वर्गों का उत्थान, कल्याण और मुक्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक भारतीय सरकार के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए एक व्यापक अहिसंक क्रांति न हो", जे.पी. का अपना अडिग विश्वास था जब वह यह कहते हैं कि-

"सम्पूर्ण क्रांति में व्यवस्था भी बदलेगी और व्यक्ति भी, इनमें कोई आगे पीछे नहीं, साथ-साथ होगा। व्यक्ति समूह के लिये जिये और समूह व्यक्ति के लिये। यह मानवीय क्रांति होगी,ऐसी-क्रांति जिसमें भारत का अध्यात्म व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन में उतर जायेगा। तब व्यक्ति अपने हितों का दर्शन समूह के हितों में करने लगेगा और वैसा ही जीवन जीने लगेगा। .... सम्पूर्ण क्रांति के सारे परिवर्तन मोटे तौर पर महात्मा गांधी की विचारधारा के अनुरूप होंगे। सर्वोदय इस क्रांति का दूसरा नाम है।[5]

जे.पी. की सोच में सम्पूर्ण क्रांति राजनीतिक दलों के माध्यम से स्थापित नहीं हो सकती। इसकी वास्तविक शक्ति आम जनता में निहित होती है जिसका कोई सरोकार राजनीतिक दलों से नहीं होता जो पक्षपाती होते हैं। दलगत पक्षता और पूर्वाग्रह सम्पूर्ण क्रांति को लाने में असमर्थ हैं। सम्पूर्ण क्रांति में छात्र और युवा अग्रणी होंगे। आगे की पंक्ति में होंगे। इनके पीछे पूर्वाग्रह रहित आम जनता की शक्ति होगी। यदि इनके साथ नैतिक शक्ति भी जुड़ गयी तो फिर वह अपराजित होगी। सम्पूर्ण क्रांति की शक्ति युवा वर्ग है। साथ में उन्होंने यह भी कहा कि सम्पूर्ण क्रांति कोई एक वर्ष में ही नहीं आ जायेगी। इसमें अनेकों बरस लग सकते हैं। यह एक दीर्घकालीन क्रांति है जो समय की परिपक्वता और तैयारी पर निर्भर करती है।

डॉ. राधाकृष्ण सिंह जे.पी. के सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन पर विचार करते हुए कहते हैं .... जे.पी. का मानना था कि सम्पूर्ण क्रांति के बिना समाज का सम्पूर्ण, किन्तु रचनात्मक परिवर्तन सम्भव नहीं है। मार्क्सवाद, गांधीवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद और सर्वोदय सभी में पारंगत जे.पी. इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि राजनीति सामाजिक जीवन की आत्मा है। राजनीति के शुद्धिकरण के बिना समाज को स्वस्थ और सबल नहीं बनाया जा सकता है। सिर्फ सत्ता परिवर्तन से व्यक्ति के आचरण में परिवर्तन नहीं हो सकता है। उनकी दशा और दिशा में सुधारात्मक परिवर्तन लाने के लिये सम्पूर्ण व्यवस्था की जड़ता को झकझोरना पड़ेगा। ..... जे.पी. ने सम्पूर्ण क्रांति के लिये सात प्रमुख स्तम्भ गिनायें। ये 'सप्त क्रांति के

5. लोक दृष्टि में जय प्रकाश, में उधृत, पृष्ठ 85.

Scanned with CamScanner

ही विशिष्ट रूप हैं' जिसकी बुनियाद कभी लोहिया ने रखी थी। सप्त सिन्धु, सप्त ऋषि, सप्ताह के सात दिन और इन्द्र धनुष के सात रंग के समान ही सप्त क्रांति के प्रमुख आयाम या व्यायाम थी।[6]'' इस तरह सप्त क्रांति की अवधारणा पवित्र और आध्यात्मिक भी है जिसमें भारत की नदियों, ऋषियों और प्रकृति से प्रेरित होकर सम्पूर्ण क्रांति को मूर्त रूप दिया गया। इस क्रांति में भारतीय मिट्टी की गंध आती है। जर्जर, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था जे.पी. को अन्दर तक झकझोर रही थी। इसीलिये उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति का आवाह्न किया।

जय प्रकाश नारायण लोकतंत्र की दुर्बलताओं से भली भाँति परिचित थे। वे जनता के सेवक थे। वे जन से जुड़ी आर्थिक सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं से अवगत थे। वे कहते थे कि ''हमारा लोकतंत्र बहुत संकुचित आधार पर टिका हुआ है। यह एक ऐसे उलटे पिरामिड की तरह है, जो सिर के बल खड़ा है। प्रत्यक्षतः हमारा कार्य है चित्र को ठीक करना और पिरामिड को फिर सही आधार पर खड़ा करना, केवल यह तथ्य कि हर बालिग भारतीय को वोट देने का हक है, शासन पद्धति के पिरामिड को व्यापक आधार नहीं दे देता है। करोड़ों की संख्या में बिखरे हुए व्यक्तिगत मतदाता बालु के कणों के ऐसे ढ़ेर की तरह है, जो किसी भी संरचना की बुनियाद नहीं बन सकते हैं। इन कणों को ईंटों का रूप देने के लिए मिलाना होगा या कंकरीट जैसे साचें में ढालना होगा, तभी ये नींव के पत्थर का रूप ग्रहण कर सकेंगे।[7]'' इस लोकतंत्रीय लचर व्यवस्था से वे काफी पीड़ित और दुःखी थे। समाज के किसी एक अंग में सुधार करने से भारतीय समाज और उसकी संरचना में कोई विशेष बदलाव नहीं आ सकता है। इसलिये समग्र सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करने हेतु ही जे.पी. ने सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन की अवधारणा को मूर्त रूप दिया। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि ''जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक न रहेगा, तब तक अच्छे-से-अच्छे संविधान और राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता। लोकतंत्र के लिए ये नैतिक गुण और मानसिक प्रवृत्तियाँ आवश्यक है।[8]'' इसलिये सम्पूर्ण क्रांति जिसके सात आयाम हैं, उसमें आध्यात्मिकता का विशेष महत्त्व है। कोई भी देश नैतिक रूप से पतित होने पर विकास नहीं कर सकता है।

सम्पूर्ण क्रांति के निम्नलिखित सात आयाम है जो अग्रलिखित हैं -

1. शैक्षिक क्रांति
2. सांस्कृतिक क्रांति
3. सामाजिक क्रांति

---

6. राधाकृष्णन, लोक दृष्टि में जय प्रकाश, पृष्ठ 371-372.
7. जयप्रकाश नारायण, लोक स्वराज्य, पृष्ठ 10.
8. जयप्रकाश नारायण, भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना, पृष्ठ 11

Scanned with CamScanner

4. आर्थिक क्रांति
5. राजनीतिक क्रांति
6. वैचारिक क्रांति
7. आध्यात्मिक क्रांति

1. शैक्षिक क्रांति (Educational Revolutions)

भारतीय शिक्षा पद्धति जो अंग्रेजी शासन से बहुत कुछ वैसे ही आ रही है, दोषपूर्ण है। इसमें आमूलचूल परिवर्तन होना चाहिए। शिक्षा के जो मूल तत्त्व हैं जैसे नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा वे तो वैसे ही रहेंगे। शिक्षा-पद्धति को परिस्थिति के अनुसार बदलना चाहिए। इसलिये सम्पूर्ण क्रांति में शिक्षा का स्वरूप नवनिर्माण के अनुकूल बनाना होगा। आज की शिक्षा डिग्री बांटने की है। लाखों युवा डिग्री प्राप्त कर रहे हैं पर उनकी उपयोगिता कुछ नहीं है। इसलिये प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन करना आवश्यक है। आज की शिक्षा व्यवस्था में गाँव, निर्धन और उपेक्षित वर्ग का ध्यान नहीं रखा गया है। कमजोर वर्ग का तो शिक्षा-व्यवस्था में कोई स्थान ही नहीं है। शिक्षा वर्तमान परिस्थितियों में युवा-पीढ़ी को तैयार कराने में असफल रही है। जे.पी. का विचार है कि शिक्षा जीवन के लिये उपयोगी हो। वह युवाओं को आत्म निर्भर बना सके। पाठ्यक्रम इस प्रकार का बनाया जाय जो सामयिक हो। शिक्षा श्रममूलक हो। गांधी जी की बुनियादी शिक्षा पद्धति का भी यही लक्ष्य है। इसलिये सम्पूर्ण क्रांति में शिक्षा व्यवस्था गांधी दर्शन के आधार पर ही गढ़ी गयी है। अमुक कार्य के लिये योग्य सक्षम और जानकार व्यक्ति की आवश्यकता होती है न कि डिग्रियों की। जय प्रकाश नारायण का कहना है कि -

"और ज्यादातर लोग पढ़ने के लिये नहीं पढ़ते बल्कि इसलिये पढ़ते हैं कि डिग्री मिलने पर नौकरी के लिये दरवाजा खुल जाता है। इसलिये अब व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि भविष्य में केवल डिग्री के आधार पर किसी को नौकरी न मिले। जहाँ जिस काम के लिए नौकरी देनी हो, उसकी अलग से परीक्षा ले ली जाय। तब शायद यह हो सकता है कि किसी को विश्वविद्यालय की औपचारिक शिक्षा न मिलने पर भी वह उस परीक्षा में पास हो जाय, और जिसने विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की है, वह न पास जाए। जब तक नौकरी और डिग्री के बीच के नाते को समाप्त नहीं किया जायेगा, तब तक डिग्री का यह झूंठा मोह नष्ट नहीं हो सकेगा।[9]" जे.पी. का यह भी विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए। अज्ञान और निरक्षरता को पूर्णतया समाप्त किया जाना चाहिए। शिक्षा इस प्रकार की हो कि व्यक्ति किसी भी प्रश्न अथवा समस्या पर अपने विचार दे सकें। ऐसी शिक्षा नहीं है तो वह निकम्मी मानी जायेगी। इतना ही नहीं वे यह भी कहते हैं कि गांव

9. जयप्रकाश नारायण, भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना, पृष्ठ 590.

Scanned with CamScanner